Shodhpith
International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 2 Issue: 1 January-February 2026

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में डिजिटलीकरण का प्रभाव

डॉ0 सुबोध प्रकाश गौतम
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर (उ0प्र0)

Article Info: *(Recieved- 06/11/2025, Accept- 15/12/2025, Published- 10/01/2026)*

DOI- 10.64127/Shodhpith.2026v2i1003

प्रस्तावना–

भारतीय ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की प्रस्थिति पुरुषों की तुलना में कम महत्वपूर्ण नही है। ग्रामीण महिलाएं पुरुषों की तुलना में ज्यादा ही जिम्मेदारियों का निर्वहन करती हैं। वे घरेलू कार्यों को तो करती हैं है, साथ ही साथ पुरुषों से कंधा से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। लेकिन साथ ही साथ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति शहरी महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा अच्छी नही है। आज का दौर डिजिटल युग का है। जिसे सुगम बनाने में इंटरनेट, टी0वी0 तथा अन्य साधन ने अपना योगदान दे रहे हैं तथा इनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव हमारे ग्रामीण समाजों पर स्पष्ट रुप से परिलक्षित हो रहा है। डिजिटलीकरण ने जहाँ एक तरफ ग्रामीण महिलाओं को अवसर प्रदान किया है वहीं दूसरी तरफ उनके सामने अनेक चुनौतियां भी खड़ी हो रही हैं। जहाँ तक ग्रामीण महिला सशक्तिकरण की बात की जाए तो यह नितान्त आवश्यक है। क्योंकि जब तक ग्रामीण महिलाएं सशक्त नहीं होंगी, उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करते रहना पड़ेगा। शहरी महिलाएं ग्रामीण महिलाओं की तुलना में ज्यादा सशक्त हैं क्योंकि वे डिजिटलीकरण का भरपूर इस्तेमाल कर रही हैं। वे नित्य नयी जानकारियों को प्राप्त करती रहती हैं जो उनके विकास के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह बताने का प्रयास किया गया है कि कैसे इंटरनेट, सोशल मीडिया एवं अन्य डिजिटल साधनों के प्रयोग से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। कैसे ग्रामीण समाज में लैंगिक समानता को लाया जा सकता है। स्त्री–पुरुष के बीच जो परम्परागत रुप से कार्य विभाजन है, उसको कैसे दूर किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण शब्द– महिला सशक्तिकरण, डिजिटलीकरण (डिजिटल युग)

विभिन्न युगों में महिलाओं की स्थिति–

भारत देश अपने इतिहास व संस्कृति के लिए विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। इसकी आधी आबादी महिलाओं की है। भारतीय समाज में समय–काल के अनुसार स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन होता रहा है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत ही अच्छी थी। उन्हें समाज में पुरुषों के बराबरी का अधिकार प्राप्त था। वे विद्या, विवाह, सम्पत्ति आदि पर पुरुषों के बराबर का अधिकार रखती थी। लेकिन उत्तर वैदिक काल

में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आना शुरु हुआ। उन्हें शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से दूर किया गया, वेदों के अध्ययन की मनाही थी, वे अब पुरुषों के बराबर धार्मिक कार्यों में भाग नहीं ले सकती थीं। स्मृति काल में स्त्रियों की स्थिति तुलनात्मक रुप से और खराब होती गयी। मध्य काल में स्त्रियों की स्थिति में और गिरावट आना प्रारम्भ हो गया। बाल विवाह, सती प्रथा जैसी कुप्रथाएं अस्तित्व में आ गयी। इसके बाद ब्रिटिश युग में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हुआ। जो समाज में कुप्रथाएं प्रचलित थीं, उनको दूर करने का प्रयास किया गया।

महिला सशक्तिकरण–

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व शैक्षिक रुप से मजबूत बनाना अर्थात वे आत्मनिर्भर हो सके तथा अपना निर्णय स्वयं ले सकें। तभी वे सही मायने में सशक्त हो सकती हैं। इनको बराबरी का अधिकार मिल सके, वे शिक्षा के क्षेत्र में, आर्थिक रुप से कोई भी निर्णय ले सके। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो महिलाओं को उनके अधिकार, सम्मान और आत्मनिर्भरता को प्रदान करती है।

डिजिटलीकरण या डिजिटल युग–

डिजिटल युग 20वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध से शुरु हुआ। यह एक ऐतिहासिक दौर है जहाँ पारम्परिक तकनीकी की जगह डिजिटल तकनीकी ले रही है। इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा अन्य साधनों ने इस युग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज आर्थिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र, शैक्षिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र सभी डिजिटल दौर से गुजर रहे हैं। डिजिटलीकरण ने अनेक अवसरों को खोल दिया है। पारम्परिक उद्योगों की बजाय अब ई–कामर्स, स्ट्रीमिंग ने जगह ले लिया है। व्यापार, शिक्षा और बैंकिंग सेवाएं ऑनलाईन होती जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य–

1. डिजिटलीकरण का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव।
2. प्रौद्योगिकी के उपयोग एंव ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
3. डिजिटलीकरण से ग्रामीण महिलाओं में पुरुषों के सापेक्ष स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का इस्तेमाल किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतो से आंकड़ों को प्राप्त किया गया है।

ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में डिजिटलीकरण का योगदान–

जैसा की विदित है कि भारतीय ग्रामीण समाजों में महिलाओं की आबादी पुरुषों के लगभग बराबर की है तथा यदि समाज की विकास की संकल्पना की जाती है तो इसमें महिलाओं को पुरुषों की ही तरह सुविधाओं को उपलब्ध कराना होगा। आज डिजिटलीकरण के युग में डिजिटल साक्षरता, वित्तीय समावेशन, आनलाइन शिक्षा, कौशल विकास तथा आय का सृजन इस युग में हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को स्मार्टजोन और इंटरनेट का उपयोग सिखाना डिजिटल साक्षरता का प्राथमिक केन्द्र है, जिससे वे वैश्विक ज्ञान से जुड़ रही हैं।

डिजिटलीकरण का महिला सशक्तिकरण के लिए निम्न क्षेत्रों में योगदान–

1. शिक्षा के क्षेत्र में–

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में डिजिटल साक्षरता का योगदान दिखाई दे रहा है। ''डिजिटल साक्षरता, जीवन की स्थितियों के भीतर सार्थक कार्यों के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों को समझने, उपयोग करने के लिए व्यक्तियों व समुदायों की क्षमता है।''

समावेशी विकास को दृष्टिगत रखते हुए महिलाओं की सहभागिता अधिक से अधिक हो इसके लिए महिलाओं

को डिजिटल रुप से साक्षर किया जाए। आज का युग सीखने व आगे बढ़ने का युग है जो जितना डिजिटल साक्षर होगा वह उतना ही आगे जाएगा। आज ग्रामीण महिलाएं इंटरनेट, मोबाइल का इस्तेमाल करना सीख रही हैं।

2. आर्थिक क्षेत्र में–

महिलाओं का आर्थिक रुप से सशक्त होने का अर्थ है कि महिलाओं के लिए रोजगार की सुलभता हो तथा संसाधनों को सुगमता से उपलब्ध कराया जाए। आज डिजिटल युग में महिलाएं ई–कामर्स व सोशल मीडिया के माध्यम से अपने व्यवसाय को आनलाईन चलाकर पैसा कमा रही हैं। ग्रामीण महिलाएं नेटबैंकिंग का उपयोग कर वित्तीय लेन–देन कर रही हैं तथा ज्यादातर महिलाएं अपने बनाए गय उत्पाद को बेच रही हैं तथा आर्थिक रुप से सशक्त हो रही हैं।

3. सामाजिक क्षेत्र में–

आज ग्रामीण महिलाएं डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर सामाजिक रुप से भी अपने को सशक्त कर रही है। आज सोशल मीडिया ने रुढ़गत विचारों में परिवर्तन लाना शुरु कर दिया है। ग्रामीण महिलाएं आनलाइन माध्यम से नित्य नयी–नयी सामाजिक जानकारी को प्राप्त कर रही हैं तथा अपने विचारों को आनलाइन माध्यम से प्रस्तुत भी कर रही हैं।

4. स्वास्थ्य के क्षेत्र में–

आज ग्रामीण महिलाएं सोशल मीडिया का उपयोग कर अपने स्वास्थ्य से सम्बन्धित जानकारी को भी प्राप्त कर रही हैं जो कि डिजिटलीकरण के पूर्व सम्भव नही था। टेलीमेडिसिन के जरिये अब ग्रामीण महिलाएं घर बैठे डाक्टरों से परामर्श ले सकती हैं।

निश्कर्श एवं सुझाव –

निष्कर्ष के रुप में यह कह सकते हैं कि आज के इस डिजिटल युग में ग्रामीण महिलाओं की इंटरनेट तक पहुंच उनके स्वयं के सशक्तिकरण के लिए ही नही बल्कि उनके सम्पूर्ण विकास के लिए अति आवश्यक है। आज डिजिल प्रौद्योगिकी महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगिक के क्षेत्र में नये अवसरों को प्रदान कर रही हैं जो सामाजिक रुप से लैंगिक समानता के लिए आवश्यक भी है। आज देखा जाए तो भारत में डिजिटल डिवाइस महिलाओं के सामने एक समस्या के रुप में बनकर उभर रही है। ग्लोबल सिस्टम फार मोबाइल कम्युनिकेशन्स एसोसिएशन और आक्सफैम के 2022 और 2023 के आंकड़ों के अनुसार महिलाओं की इंटरनेट की जागरुकता 60 फीसदी से भी कम है। आज महिलाओं के सामने डिजिटली रुप से जुड़े रहने से कई चुनौतियां भी सामने आ रही हैं। उन्हें आनलाइन उत्पीड़न, साइबर दुर्व्यवहार आदि सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य भी बिगड़ रहा है।

सुझाव–

1. महिलाओं के लिए विशेष डिजिटल कार्यक्रम को बनाया जाना चाहिए।
2. ग्रामीण महिलाओं तक इंटरनेट की पहुंच को सुगम बनाया जाए।
3. ग्रामीण महिलाओं के डिजिटलीकरण के प्रति जागरुकता लाया जाए।
4. ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाए, जिससे वे नयी तकनीकों को सीख सकें।
5. ग्रामीण महिलाओं को भी पुरुषों के बराबरी में लाने का प्रयास किया जाए।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not

be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. जैन, प्रकाश चन्द, ग्रामीण समाजशास्त्र, भारतीय परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेश्ज्ञन–2021.
2. सिंह, जे0पी, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन 21वी सदी में, PHI Learning Private Limited-
3. ग्रामीण विकास समीक्षा–महिला सशक्तिकरण विशेषांक, जून 2016.
4. कुरुक्षेत्र–जनवरी 2018, ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण.
5. कुरुक्षेत्र–दिसम्बर 2016, महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति.

Cite this Article-

'डॉ0 सुबोध प्रकाश गौतम,'ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में डिजिटलीकरण का प्रभाव' Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:2, Issue:01, January-February 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."